सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 149

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 34-35
अगस्त–सितम्बर : 2016

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

"श्री साईनिकेतन का 17वाँ वर्धापन"

गुरूबंधुभगिनियों से

वं. दादाजी ने कहा था कि कार्यकेन्द्र शुरू करने का उत्साह (Excitement) और उसे चलाने की तड़प, यह दो अलग चीजें हैं। आज आप सब में यह तड़प है इसीलिए हम आज का शुभ दिन मना रहे है, इस प्रकार की, कार्य के प्रति तड़प और प्रेम आप सभी के मन में हमेशा जागृत रहे जिससे इस कार्य का लाभ पूरे जगत को मिले यही वं. दादाजी और प.पू. बाबा के चरणों में विनम्र प्रार्थना है।

विभूतियों ने कहा था कि हमें तैयार रहना चाहिये। इसके लिए किसी पर कोई मजबूरी नहीं है, लेकिन तैयारी तो होनी ही चाहिये। आज हमारी तैयारी कितनी है?इन 17 सालों में हमारा क्या सहयोग हुआ होगा यह हमें तो पता ही नहीं लेकिन वं. दादाजी को हम पर पूरा भरोसा है और कार्य का credit भी वह हमेशा की तरह भक्तों को ही देंगे इसमें कोई भी शंका नहीं। यह रिवाज युगों से चलता आ रहा हैं भगवान कृष्ण ने जब गोवर्धन पर्वत अपनी छोटी उंगली पर उठाया था, तब सभी को अपनी अपनी लाठी से उस पर्वत को उठाने के लिए support करने के लिए कहा। सभी गाँव वालों ने अपनी लाठी उठाई लेकिन पर्वत तो कृष्ण जी की उंगली पर ही था। उसी प्रकार आज भी यह कार्य वंदनीय दादाजी, प.पू.बाबा और पुण्य विभूतियाँ कर रही है, हमें तो सिर्फ अपनी लाठी सीधी रखनी है मतलब हमारे आचार, उच्चार और विचार सीधे रखने हैं। इसी से कार्य का पर्वत उठाकर उसके लिए धन्यवाद हमें देंगे।

क्या इस कार्य में एक रूप होने के लिए हम तैयार हैं?आज इतने काल से अगर हम ऊँकार साधना कर रहे हैं तो इससे हमें क्या प्राप्ति/लाभ हुआ है?इसका अनुमान क्या हम लगा सकते हैं। आज हम जो समय इस कार्य में दे रहे है, उसके बदले में हमें क्या आपेक्षित है?

हमारी देह में दो शक्तियाँ काम करती है। एक देहिक शक्ति और दूसरी आत्मिक शक्ति। चलना–फिरना शरीर का हिलना (Movement) और विचार, यह देहिक शक्ति के माध्यम से होते हैं। इस शक्ति के लिए हम हर चार से छः घंटे में कुछ खाना खाते हैं। इसलिए सिर्फ विचार करने से भी थकान महसूस होती है क्योंकि उसमें देहिक शक्ति का अपव्यय (खर्च) होता है।

आत्मिक शक्ति के माध्यम से चैतन्य, धारणा, समाधान यह काम होते हैं। आशीर्वाद की धारणा, ज्ञान की धारणा एवं कर्म की धारणा भी आत्मिक शक्ति के माध्यम से होती है।

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

पंचमहाभूत तत्वों के हिसाब से

दैहिक शक्ति	**आत्मिक शक्ति**
पृथ्वी, आप, वायु (50%)	वायु (50%), तेज, आकाश
चलना–फिरना, विचार	धारणा, समाधान

आत्मिक शक्ति की प्राप्ति करने के लिए हम क्या करते हैं, तो – दैविक उपासना, वैदिक उपासना, सद्कर्म, सद्कृत्य और जीवन में काया–वाचा–मन से एक रूप होकर किया हुआ कर्म। जैसे आत्मिक शक्ति बढ़ती है वैसे ही समाधान बढ़ता है। इसलिए जीवन में हमें काफी लोग ऐसे दिखते हैं कि जो भगवान की उपासना नहीं करते या भगवान को मानते भी नहीं फिर भी सुखी, समाधानी और खुश रहते हैं। इसका कारण यह है कि सद्कृत्य करने से दूसरों की मदद करने से उनको बिना समझे आशीर्वाद मिलते हैं और जीवन में अधिकतम् काम काया–वाचा–मन से एक रूप होकर करने से उनकी आत्मिक शक्ति बढ़ती जाती है। उस वजह से कर्म की धारणा होने में कोई रूकावट नहीं होती और जीवन व्यतीत करते समय कोई तकलीफ नहीं होती, बल्कि समाधान की प्राप्ति होती है।

आज सर्वसाधारण मानव 75% दैहिक और 25% आत्मिक शक्ति के माध्यम से जीवन व्यतीत करता है। यह Proportion 50%से 50% हुआ तो वह व्यक्ति सुखी–समाधानी हो सकता है। जब पहली बार हम कार्य केन्द्र में आते है तब जो उपसाना अथवा प्रसाद दिया जाता है और जो आशीर्वाद प्राप्त होता है उस माध्यम से गुरूशक्ति प्रवाहित होकर हमारे शरीर में जो आत्मिक शक्ति की कमी है उसको भर दिया जाता हैं इस गुरूशक्ति की धारणा जैसे हो गई वैसे हमें समाधान–आनन्द प्राप्त होता है।

अगर समाधान का लाभ इस प्रकार होता है तो फिर इस जगत में दुःख क्या है?मनुष्य जन्म प्राप्त होने पर जो दोष हमारे पिछले जन्मों से आये है और हमने जिस कुटुम्ब में जन्म लिया उसके पिछली सात पीढ़ियों के जो दोष है वह दुःख की निर्मिती (निर्माण) करते है। आज कोई गरीब घर में जन्म लेता है तो कोई अमीर घर में आता है इसका कारण यह है कि जिस प्रकार हमारे पिछले जन्म के कर्म है उसके अनुसार जीवन की उन्नत्ति/सार्थकता कहाँ जन्म लेकर होगी इस हिसाब से यह जन्म प्राप्त होता है जिसके लिए 50% पूण्य कर्म खर्च होता है जिसकी पूर्ती इस जन्म में हमें करनी है। यह पूर्ती आत्मिक शक्ति के माध्यम से होकर जैसे धारणा शक्ति बढ़ गई वैसे कर्म प्रवाहित होने की कठिनाई दूर हो जाती है। फिर वह पिछले जन्मों के कर्म दुःख पैदा भी करते हैं तो भी उससे सामना करने की ताकत हममें आत्मिक शक्ति के रूप से होती है। इसलिए हमें लोग काफी कठिनाईयाँ/समस्या होने के बावजूद भी हँसते नज़र आते हैं। जो पिछली पीढ़ियों से आये हुए दोष है, मतलब दादा–परदादाओं की धन–दौलत जैसे हमें मिलती है वैसे ही वह धन प्राप्त करते समय अगर किसी पर अन्याय हुआ होगा तो उसका दूषित कर्म उस धन के साथ हमारे पास आता है। और जब तक उस दूषित कर्म का क्षय नहीं होता, तब तक वह दुःख निर्माण करता है। इस प्रकार के दूषित कर्मों से आगे कठोर दुःख–सम्पत्तिनाश (धन–नाश), संततीनाश, विद्या नाश उन कुटुम्बों के व्यक्तियों के नसीब में आ सकते है। और एक दोष हमारे नसीब में, अपना घर (वास्तू) अशुद्ध होने की वजह से आ सकता है, उसको वास्तुदोष कहते है।

इस प्रकार के दुःख निवारण करने के लिए और अपनी आत्मिक शक्ति बढ़ाकर समाधान प्राप्त करने के लिए हमारे पूर्वजों ने तीन मार्ग बताये हैं :

1. वैदिक मार्ग : इसमें श्लोक पठन करके, यज्ञ योग करके शक्ति का (पंचमहाभूत शक्ति का) आवाहन किया जाता है और उससे दोशों का निवारण करके समाधान प्राप्त किया जाता है। इस मार्ग से जाने के लिए आज संस्कृत बोल सकते हैं ऐसे लोग काफी कम है जिनका उच्चार बराबर होता है। संस्कृत भाषा के अलावा इस मार्ग के लिए <u>वाणी की सिद्धता होना आवश्यक है</u>; उसके लिए शास्त्रों में जो यम–नियम लिखे है उनका पालन पूरी तरह होना अतिआवश्यक हैं यह मार्ग अस्तित्व में होने के बावजूद उसके लिये कोई अधिकारी, अनुभवी व्यक्ति से मिलना कठिन होता है।

2. देवदैविक मार्ग : इस मार्ग में शक्ति की प्राप्ति देव–देवताओं की प्रतिमा के द्वारा की जाती हैं इसलिए शक्ति को आवाहन करके उसकी प्रतिष्ठापना मूर्ति में करके उसका लाभ नियमित पूजन–अर्जन करके लिया जाता है। इसमें दो चीजें महत्वपूर्ण होती है; पहली बात – उस शक्ति का पुनरूज्जीवन होना जरूरी होता है। इसका मतलब हमेशा कुछ लोगों की उपासना निरपेक्ष होनी चाहिए, तब ही शक्ति का आवाहन होता रहेगा और बाकी लोगों को उसका लाभ होगा। दूसरी बात यह कि इन देवताओं की स्थापना त्रिगुणात्मक शक्ति के किसी एक तत्व से हुई है। मतलब उत्पत्ति–स्थिति–लय में से किसी एक तत्व की धारणा अलग–अलग देवताओं में की गई है और हमारे शरीर में जो तत्व प्रधान होकर बाकी दो तत्व गौण (Secondary) होते हैं उसके अनुसार ही उस देवता की उपासना करके हमें लाभ होता है। इसका ज्ञान जिसको हो सकता है, उस अधिकारी व्यक्ति के मार्गदर्शन से यह जानकारी मिल सकती है। उसी प्रकार कोई एक मंत्र, पढ़ने के लिए देते समय,

वह देने वाले व्यक्ति को उस मंत्र की सिद्धता करनी जरूरी होती है, तो ही लेनेवाले को उस मंत्र के माध्यम से शक्ति का लाभ होता है। इस मार्ग से जाने के लिए भी शास्त्रों में जो यम–नियम आहार–विहार, आचार–विचार, पूजा–पद्धति, षोडषोपचार विधियाँ बताई है, उनका पालन होना आवश्यक है। इन सबका पालन करके शक्ति आवाहनित हुई लेकिन उसकी धारणा हमारे माध्यम में/शरीर में नहीं हो पाई तो वह हम पर और हमारे कुटुम्ब के व्यक्तियों पर आघात करती रहती है और फिर वह लोग हमेशा क्रोधित रहते हैं समाज में हमें नज़र आता है कि कई लोग दैवदैविक उपासना काफी करने के बावजूद शांत और समाधानी न होकर हमेशा क्रोधित रहते हैं।

यह मार्ग भी आज आस्तित्व में है लेकिन उसके अधिकारी/ज्ञानी व्यक्ति काफी कम है और बदलती परिस्थिति के अनुसार इस मार्ग को निभाना मुश्किल होता जा रहा है।

3. तीसरा मार्ग : भक्ति मार्ग/गुरूमार्ग : इस मार्ग में शक्ति का आवाहन गुरू के माध्यम से होता है और भक्तों को उस शक्ति की धारणा करने के लिए कहा जाता है/सिखाया जाता है। इसमें गुरू मार्गदर्शन के अनुसार उपासना करके हम अपने माध्यम जैसे–जैसे विकसित करते जायेंगे वैसे–वैसे शक्ति की धारणा होती जायेगी।

हम हमारे गुरू मार्ग का मतलब इस संस्था के कार्य के बारे में सोचे तो आगे आने वाले समय में वैदिक और देवदैविक उपासना करना मुश्किल हो रहा है; तब लोगों के दोषों का परिमार्जन करके, उनको सुख–शांति–समाधान प्राप्त होने के लिए और उनके जीवन को सार्थक करने के लिए, ईश्वर की प्रेरणा से वं. दादाजी के माध्यम से दत्त–नाथ और सूफ़ी पंथों के दिव्य–पुण्य विभूतियों द्वारा स्थापित किया हुआ यह मार्ग गुरू मार्ग है।

इस मार्ग में दोषों का परिमार्जन करने के लिए तीन विमोचन, वंश विमोचन, कर्म विमोचन और ऋणमोचन इनकी सिद्धता की है और जैसे–जैसे दोष निकलते गये वैसे–वैसे दीक्षा मतलब गुरू शक्ति प्रवाहित की है। पाँच दीक्षाऐं – उपासना दीक्षा, नामःस्मरण दीक्षा, अनुग्रह दीक्षा, गुरूदीक्षा और कारण दीक्षा संक्रमित करके इन दीक्षाओं को महाकारण अवस्था में समाया और फिर प्रज्ञा अवस्था प्राप्त करा दी। यह सब विमोचन, दीक्षा, प्रार्थना में, आरती में और ऊँकार साधना में समायी जिसको निश्चिंत होकर अनुसरण कर सकते हैं ऐसा सबसे सुलभ मार्ग श्री गुरू महाराज वं. दादाजी ने प.पू. साईबाबा, पूर्ण विभूतियों तथा नवनाथ आदि के मार्गदर्शन द्वारा स्थापित किया।

अगर किसी मानव को खुद से कुछ प्राप्त करना है तो एक विमोचन का साधन प्राप्त करने के लिए एक जनम भी काफी होना मुश्किल है। यह कार्य हुआ क्योंकि यह ईश्वर की योजना है जिसको साथ मिला वं. दादाजी के माध्यम का और उनकी लोक कल्याण के प्रति हुई निश्चित और अटल आस्था का निर्माण।

इस कार्य में वं. दादाजी को कोई तपःश्चर्या कर, किसी देवताओं को या विभूतियों को प्रसन्न नहीं करना पड़ा या फिर बार–बार शिरड़ी जाकर साईबाबा को प्रसन्न नहीं किया, बल्कि इस कार्य की सिद्धता के लिए जिस प्रकार आवश्यकता थी उस प्रकार विभूतियों का आगमन होता गया। वं. दादाजी को जो तपश्चर्या या उपासना करनी पड़ी वह भगवान को प्रसन्न करने के लिए नहीं बल्कि शक्ति की धारणा करके उसे सौम्य रूप देने के लिए और हमारे जैसे सामान्य मानवों को उसका लाभ होने के लिए। यह कार्य करते समय वं. दादाजी को और उनके परिवार के सदस्यों को बहुत तकलीफें उठानी पड़ीं लेकिन उसका उच्चार भी उन्होंने कभी नहीं किया।

वं दादाजी को बचपन में पहले उनके पिताजी का मार्गदर्शन मिला, फिर उनके गुरू तेली महाराजजी का आशीर्वाद मिला। बारहवें साल की उम्र में भैरवनाथ जी के मंदिर में ऊँकार की प्राप्ति हुई। तब अगर खुद के परिवार का ही उद्धार करना होता तो वह बड़ी सहजता से कर सकते थे परन्तु तब वे सामान्य मनुष्य का जीवन सुखी–समाधानी किस प्रकार होगा यह सोच रहे थे। तब श्री साईनाथ जी का मार्गदर्शन मिला और उस प्रकार सेवा का आरम्भ किया। देव देवताओं की शक्तिओं पर नाथ पंथ के विभूतियों का प्रभाव है इसलिए नाथ पंथ इस कार्य में समाया। नाथ पंथों की सिद्धताओं को दत्त पंथ ने सामर्थ्य दिया है इसलिए दत्त पंथ की उपासना की। औदूंबर में ढाई साल रह कर पाँच घर भीक्षा माँग कर कठोर तपःश्चर्या की और परलोक का साधन सिद्ध किया। दत्त और नाथ पंथों की सिद्धता कार्यान्वित करने के लिए सूफी पंथ इस कार्य में समाया। सूफी पंथ के ब्रीद के अनुसार कामकाज शुरू किया मतलब जिसने "दिया उसका भला नहीं दिया उसका भी भला।" मतलब आने वाले मनुष्य ने उसके जीवन का कोई हिस्सा इस कार्य में दिया तो उसका भला तो करेंगे ही लेकिन जो नहीं दे पाया उस मनुष्य का भी भला करेंगे। फिर पंतमहाराज इस कार्य में समाये और शब्द ब्रह्म की प्राप्ति हुई।

1956 के साल में दशहरे के दिन शाम को चार बजे वं. दादाजी ने साई आध्यात्मिक समिती का आरम्भ किया। धोती पहने हुए कुमकुम लगा के समिति का नाम लेकर कहा कि यह कार्य किसी एक मनुश्य का नहीं है तो कार्य समिति का होना

चाहिये। आगे इक्कीस साल कामकाज करके कुछ सेवक आगे के कार्य के लिये चुने। मतलब कई लाख लोगों ने इस कार्य का लाभ लिया। सभी लोग अपने अपने दु:ख़ निवारण करने के लिए आये थे लेकिन कुछ ही लोग इस कार्य में समाये और उनके माध्यम का उपयोग श्री गुरू ने किया। 1965 वें साल में 'उत्पत्ति' शक्ति का आवाहन करते समय वं. दादाजी के शरीर पर पहला आघात गणेश चतुर्थी के दिन हुआ। उस शक्ति का प्रभाव 70–80 दिन रहने के बाद वं. दादाजी फिर उठ गये। आगे बारह साल सेवा करके विमोचनों को सिद्ध किया और उसके साथ सेवकों को भी तैयार किया। फिर नरसोबा वाड़ी में मार्गदर्शन के अनुसार हवन विधी करके आखिर में महारूद्र स्वाहाकर किया। तब नरसिंह–सरस्वती के पास से ऊँकार की प्राप्ति हुई और उस सूर्य समान प्रखर शक्ति को सौम्य करने का काम शुरू किया। यह करते समय कामकाज साधन, सेवकों को देकर त्रिगुणात्मक शक्ति का शक्तिपीठ की स्थापना करने के लिए काम शुरू किया। पाँच साल सम्मेलन लेकर (1978–1982) शक्ति प्रवाहित की और उसको ऊँकार साधना का आकार दिया और भक्तों को उपासना सिखाते हुए ज्ञान यज्ञ किया। हर साल कन्हाड़ में दो सम्मेलन लेकर शक्ति का आवाहन करके उसे सौम्य करके प्रवाहित करते रहे और उसी के साथ भक्तों को कार्य का उद्देश्य और जीवन का ज्ञान देते गये।

फरवरी 1983 में सम्मेलन में शक्तिपीठ का आवाहन किया और 14 अप्रैल 1983 के दिन चैत्र प्रतिप्रदा को पर्वरी, गोवा में शक्तिपीठ की स्थापना की। शक्तिपीठ में त्रिगुणात्मक शक्ति की धारणा करते समय, शक्तिपीठ को आवाहन करने से पहले बत्तीस शिराला में (कराड के नजदीक) सब भक्तों को दीक्षा देने के लिए पंचमी के दिन मंदिर में बुलाया और उसके पहले दिन खुद के शरीर का तेज और आकाश तत्व विभक्त करके शक्तिपीठ आवाहन का संकल्प और दीक्षा देने के लिए भक्तों को दूसरे दिन बुलाया था। तब वं. दादाजी के शरीर पर दूसरा आघात (stroke) हुआ। डॉक्टर ने 90 दिन का बेडरेस्ट लेने के लिए कहा था। दीपक दादा वं. दादाजी को पूना ले कर गये। 8–10 दिन में सम्मेलन था; 3–4 दिन दादा उठ नहीं पा रहे थे। सातवें दिन बोले गोवा चलेंगे वहाँ कराड़ आकर सम्मेलन लिया और शक्तिपीठ का आवाहन किया। उसके आगे महाकारण अवस्था और प्रज्ञा अवस्था को सिद्ध किया। मतलब एक बार अपने शरीर का विकास होकर माध्यम तैयार हुआ तो बस विचार किया और गुरू का नाम लिया तो शक्ति की धारणा होकर वो प्रवाहित हो सकती है।

1984 अगस्त में गुरूपौर्णिमा के दिन उन्होंने मुलाकात की और जो दिव्य साधना की उसके बारे में बताया। आगे कार्य शुरू किया और प्रतिमाओं की सिद्धता की। (श्री साईशक, कारण, महाकारण)

1985 से 1987 के साल में वं. दादा जी ने दो महान ग्रंथ गुरूप्रसाद, आत्मनिवेदन दुनिया को दिये। तभी नारायणी प्रतिमा सिद्ध कर, नर का नारायण होने की तरतूद सिद्ध करके दी।

आगे 1991 के वर्ष में दशहरे के दिन सुबह दस बजे धोती पहने, कुमकुम लगाकर बैठे थे और फिर एक और आघात उनके शरीर पर हुआ। शाक्तिपीठ की स्थापना करने के बाद, उसी साल नवरात्री में पंचमी 12 अक्टूबर 1983 के दिन शक्ति का आघात वं. दादाजी पर हुआ और शून्य अवस्था में वे 9 महीने व 9 दिन रहे। उसके बाद बताया कि अब तुम्हें सिद्ध करने के लिये कुछ रखा नहीं है यह सब 35 वर्षों में पूर्ण करना था इसलिए एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गंवाया। (जिस स्थिति में समिति की स्थापना की गई उसी स्थिति में 35 वर्ष के बाद 6 घंटे पहले आखरी शक्ति का आवाहन करके अपनी देह की शक्ति, शक्तिपीठ में धारण की।)

अब हमें सिर्फ शक्ति की धारणा करके उसे प्रवाहित करना है। इस कार्य से विश्वशांति होगी यह उनका विश्वास और सकंल्प है।

आज इस जगत में अपने कार्य केन्द्रों के अलावा कोई एक स्थान ऐसा नहीं है जहाँ तीनों तत्वों की शक्ति का अस्तित्व है और जिसका लाभ सभी धर्मों के मानवों को हो रहा हो। सभी देवताओं की मान्यता और उनका अंतर्भाव इस कार्य में है इसलिये यहाँ आने वाला हर एक मनुष्य सुखी–समाधानी हो सकता हे। जिस वर्ष शक्तिपीठ की स्थापना हुई उस साल वं. दादाजी ने अपने गुरू के नाम से 'श्री साई शक' एक शुरू किया। 'साई' का मतलब विश्वबंधुत्व। इससे विश्वशांति प्रस्थापित होगी यह निश्चित है।

इस कार्य में सिर्फ वं. दादाजी के जीवन की साधना ही नहीं बल्कि दत्त–नाथ–सुफी पंथों की सिद्धताएँ भी समाई है। हम हर रोज जो उदी ग्रहण करते हैं उसकी उत्पत्ति ढाई हजार साल पहले की है। जब एक स्त्री पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद लेने के लिए श्री मंच्छिंद्रनाथ जी के पास आई थी; तब मच्छिंद्रनाथ जी ने उसको एक भस्म ग्रहण करने के लिए दी। उसने आसपास के लोगों का उपहास सुनकर अज्ञान से वह भस्म रास्ते के कोने में फेंक दी। आगे बारह वर्ष बाद मच्छिंद्रनाथ जी वापस वहाँ पर आये और उस स्त्री को पूछा, "हमारा बच्चा कहाँ है?" तब उस स्त्री ने कहा कि लड़का तो हुआ नहीं। तब मच्छिंद्रनाथ जी बोले "यह असम्भव है, एक बार यह सृष्टि यहाँ की वहाँ हो सकती है लेकिन दी हुई जबान व्यर्थ नहीं जायेगी।"

तब उस स्त्री ने उनके पाँव पकड़कर क्षमा मांगी और उनको वह जगह दिखाई जहाँ भस्म फेंका था। वहाँ जाकर मच्छिंद्रनाथ जी गरजकर बोले, "अलख निरंजन! चलो उठो बेटा!" उस मिट्टी से जो बालक बाहर आया वो 'गोरक्षनाथ' थे। उसी भस्म की मतलब उदी की निर्मिती फिर श्री (साईनाथ जी ने) साई बाबा ने शिरडी में की और 1910–1912 में एक घड़े में यह उदी भरके उन्होंने अपने शिष्य अब्दुलबाबा को देकर कहा कि, "मेरा बेटा यह उदी लेने के लिए आयेगा उसके कार्य की तरतूद मैंने इसमें कर रखी है। उसको यह उदी दिये बगैर तुम्हें शिरडी छोड़ने की आज्ञा नहीं है।"

1952 के वर्ष में वं. दादाजी पहले बार शिरडी गये। तब श्री अब्दुल बाबा ने दादाजी को गले लगाकर वह उदी से भरा हुआ घड़ा दिया। वं. दादाजी ने उस उदी पर अनुष्ठान करने के बाद उसका अंतर्भाव इस कार्य में किया। हर बार उदी करते समय उसमें पिछले बार की उदी मिलाई जाती है। मतलब हम आज जो उदी ग्रहण करते है उसमें वह साईनाथ जी की उदी और सभी सिद्धता समाई हुई है। हमारी भावना और विचार योग्य होंगे तो सिर्फ यह उदी भी हमारे जीवन का उद्धार करने के लिए काफी है।

बहुत सारे लोगों को जमा करना यह इस कार्य का उद्देश्य नहीं था। अगर रहता तो जिन विभुतियों ने वं. दादाजी के माध्यम से काम किया उनके स्थानों पर हर साल लाखों भक्त जाते उनको न बोला होता या फिर यह बाहर बताया होता तो आज अपने कार्यकेन्द्रो पर कितनी बड़ी कतार लगती। पर वं. दादाजी बोलते थे कि, "मुझे भीड़ भरती नहीं करनी, यहाँ आने वाला हर एक व्यक्ति कार्य करने के लिए सिद्ध होना चाहिए। उनके माध्यम से विश्वशांति होगी यह इस कार्य में है।" यह भरोसा उनका हमारे उपर है और श्रद्धा इस कार्य पर है और सबुरी.....वह भी उन्हीं के पास है क्योंकि हम लोग तो यहाँ हमारी ऐहिक समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने के लिए आये और आज भी उसकी प्राथमिक भावना से इस कार्य का लाभ ले रहे हैं।

नए लोगों को यह मालूम होना जरूरी है कि वं. दादाजी ने खुद को कभी गुरू नहीं कहा बल्कि हमेशा 'सेवक' कहा। वह कहते थे कि, "जो श्री साईनाथ जी और अन्य दिव्य, पूज्य विभूतियाँ है उनके जो भक्त है, उनके भक्तों का मैं सेवक हूँ।" वं. दादाजी की आरतीयाँ, उनके नाम का प्रार्थना में, जयजयकार में, प्रतिमा में समावेश उनके देहत्याग के पश्चात विभुतियों के मार्गदर्शन के अनुसार भक्तों ने किया है।

आज 6 सितम्बर प.पू. साई बाबा तथा वं. दादाजी व अन्य विभूतियों के आध्यात्मिक इस शक्ति केंद्र के 17 साल उन्हीं के कृपा आशीर्वाद से पूर्ण हुए तथा आज अठारहवें साल का शुभारंम मनाने के लिए हम उपस्थित हुए है।

गुरुकृपाशीर्वाद से आज तक जो सेवा आप सब गुरुबन्धुओं ने की या इस केंद्र द्वारा होती रही है उसके लिए मैं श्री गुरु का जन्मों ऋणी रहूँगा तथा आप सब ने जो सहवास इस कार्य में प्रदान किया है मैं उसके लिए आप सबका आभारी हूँ। सभी गुरुबन्धुओं तथा दुनिया को सुख, शांति प्राप्त हो ऐसी सद्गुरु के चरणों में प्रार्थना करता हूँ।

आज इस संसार में जो प्रतिक्षण घटित हो रहा है या घटित किया जा रहा है, उसके पीछे जो सत्ता है, उसका अधिकार महान है। चार ईश्वर भक्तों के सुख–दुःख के लिए नियंता (परमेश्वर)का कार्य नहीं बदला जाएगा। आज दुनिया में ईश्वर की कृपा के लाभ का तात्विक दृष्टिकोण से अभ्यास करने की आदत और पात्रता न होने वाले को ऐसा लगता है कि, 'ऐसी घटनाओं की जानकारी बाबा या विभूतियों ने पहले से देनी चाहिए।' ऐसा यदि होगा तो मनुष्य के जीवन में जीने लायक कुछ भी नहीं रहेगा। जीवन में कुछ भी कारण से नुकसान हुआ तो मनुष्य 'भगवान व नसीब' को दोष देता है। लेकिन जब कुछ कारण से लाभ होता है तो भी नसीब और भगवान को दोष देना चाहिए लेकिन ऐसा कोई नहीं करता। नुकसान होने से आदमी कर्तृत्ववान होता है, तो दूसरी वजह से यानी लाभ होने से कर्तृत्वहीन होता हैं।

आज इस विषय पर लिखना या चार शब्द कहना अयोग्य होगा क्योंकि जीवन की ओर देखने की हर एक की दृष्टि भिन्न होती है और 'जैसा दृष्टिकोण वैसा चश्मा' ऐसी बाबा की सीख है। इसलिए जिसके जीवन के दोष, जिसकी वजह से जाते हैं, उसे वह बहुत मूल्यवान लगता है। जवानी में जिसकी आँखें अच्छी है, उसे चश्मा यह एक 'खेल' या 'उपहास' लगता है, मगर बुढ़ापे में 'उसके बगैर जीवन व्यर्थ' यह होता है इसलिए वह चश्मा ध्यान देकर संभालता है। आज आपकी अवस्था भी ऐसी ही है। सद्गुरूकृपा के बगैर जीवन में सुख या दुःख क्या है, यह समझ नहीं आएगा। जिन्हें आज कुछ अनुकूल परिस्थिति की वजह से या अन्य कारण से, सद्गुरूकृपा की आवश्यकता का एहसास नहीं है उन्हें– "ऐसी नैसर्गिक घटना या आपत्ति क्यों आई, उस वक्त भगवान कहाँ थे, भगवान ने इसके बारे में पहले क्यों सूचित नहीं किया, फिर देवधर्म (भगवान की पूजा अर्चा) क्यों करे" ऐसे कई सवाल आते (सूझते) हैं। परन्तु ऐसे लोगों को यह नहीं मालूम कि – 'ईश्वर–भक्त इस जगत में दुःख भुगतने के लिए ही आए हैं, सुख के लिए नहीं!' फिर आने वाली कोई भी परिस्थिति यह उनका दुःख नही है। कोई पदार्थ मनुष्य कब नहीं खाता है तो जब उसे वह अच्छा नहीं लगता है तब। परन्तु वह पदार्थ जिसे पसंद है उसे, वही पदार्थ अमृततुल्य लगता है। अतः जिसे वह पदार्थ पसंद है, वह व्यक्ति क्या औरों की इच्छा के लिए या अपवाद के लिए वह पदार्थ

खाना छोड़ देगा?तद्वत ही मनुष्य जीवन निर्माण हुआ है। बगीचे में जो फल फूलों के पौधे हैं उन्हें बाल्टी से कितना भी पानी दो तो भी वे ताजा दिखने के लिए बारिश की ही आवश्यकता होती है, वैसे ही सुख–दुःख में एक दूसरे की कितनी भी सहायता की तो भी, सद्गुरूकृपा के बिना सुख शांति निर्माण नहीं होगी।

भगवान ने मनुष्य को उसके जन्म के साथ ही सुख, शांति और समाधान दिया है, लेकिन उसका अनुभव लेने के साधन मनुष्य ने प्राप्त नहीं किए, इसलिए वह उस सुख का निर्माण करने निकला है। आज लाखों साल ऐसे ही बीत गए हैं व आज भी वैसी ही स्थिति है। ऐसी परिस्थिति में हमें अन्य विचारों को जीवन में स्थान देने से नहीं चलेगा, क्योंकि अगर ऐसे विचार सुविचार होंगे तो हम भी सुविचार करेंगे व यदि वे अविचार या अज्ञान होंगे तो हमारे विचार भी अविचारी और अज्ञानी होंगे और हमारी सन्मार्ग से श्रद्धा कम होगी।

इस दुःखमय घटना से आज बहुत लोग दुःखी हुए, वैसे ही आगे सुख भी निर्माण हो सकता है या नही, यह यदि हमारी समझ में नही आता, तो इस दुःखमय घटना के लिए किसी को भी यानी ईश्वर को दोष देना कैसे चलेगा?प्रत्येक मनुष्य उस ईश्वर की ही संतान है। उनके दुःख के कारण क्या ईश्वर को दुःख नहीं हुआ?'हाँ हुआ है', लेकिन अगर ईश्वर दुःख ही व्यक्त करते रहे तो इस दुःखमय घटना के लिए पीड़ितों के पुनर्वसन का कार्य करने की बुद्धि मानव को नहीं होगी, मानवों के प्रयत्नों को यश प्राप्त नहीं होगा तथा चारों दिशाओं से महाराष्ट्र या उत्तर भारत की सहायता करने के लिए कोई तैयार नहीं होगा। मनुष्य सोया हुआ था, उसे जगाना जरूरी था। जिसने आज दुःख दिया वो कोई अज्ञानी नही, तो सर्वज्ञ और सर्वस्व है, यही तो खूबी है और वो ही अब नए सुख के मार्ग तैयार कर रहा है। बहुत सालों का समय ऐसा गया कि लोगों को अपने स्वार्थ के आगे, आस–पड़ोस के लोगों का दुःख नहीं दिख रहा था, तभी विधाता ऐसी घटनाऐं करवाता है। परन्तु इस क्षण हर कोई विधाता को गाली दे रहा है और देनेवाला है।

<u>प.पू. बाबा का कार्य ऐसी भूत भविष्य की घटनाओं के बारे में बताना यह नहीं है। 'जिस मनुष्य का जीवन पूर्णतया व्यर्थ हो गया है, या अज्ञानवश व्यर्थ होने वाला है, उसे जीवन का तात्विक मर्म समझाना' यह बाबा का कार्य है और वह सेवा यहीं उपासना है।</u>

आज भारत के अनेक भागों में नदियों के पानी से घर का चैन (एशो–आराम) का सामान भीग गया, मकान खराब हो गए, आर्थिक नुकसान हुआ, लेकिन जिंदगी में ऐसा एक ही बार (दफा) होना था। परन्तु रोज जीवन में अज्ञान और अविचार की बाढ़ आकर 'काया, वाचा व मन खराब हुआ है, तथा खराब हो रहा है' <u>ऐसा क्या कभी महसूस हुआ है?</u> जो वासनाऐं चैन की वस्तुओं का उपभोग लेने के लिए तड़प रहीं है, वे ऐसे ही रोज आने वाले अज्ञान की बाढ़ से निर्माण हुई है, इसका ज्ञान क्या आपको हुआ है? पूना में मुठा नदी में आई बाढ़ की वजह से मानवीय जीवन का जो नुकसान हुआ है उसे पूर्ववत करने हेतु सरकार ने जैसे समिति स्थापित की है और उनको जैसे चारों ओर से आवश्यक मदद मिल रही है, वैसे ही रोज आने वाले अज्ञान की बाढ़ से जिनके जीवन व्यर्थ जाने वाले है, उसे ठीक करने हेतु भगवान ने इस कार्य की स्थापना की है और विभूतियों को चारों दिशाओं से सहायता हेतु भेजा है। आज के शुभदिन पर वह मदद लेकर यहाँ उपस्थित भक्त भाविकों ने केवल खाना–पीना, कपड़ा, ऐश–आराम इतना ही अपना जीवन मर्यादित ना रखते हुए, मदद (आशीर्वाद) लेकर अपने कर्तव्य किए तो ही जीवन का पुनर्जीवन हो सकेगा। नही तो जन्म–जन्म तक बाढ़ (दुःख की, संकट की, अज्ञान की) और मदद के (आशीर्वाद के) लिए पुनः जन्म, इसके अलावा जीवन की श्रम सफलता किसमें है व प्राप्त जन्म का महत्व किसमें है, यह नहीं समझ में आएगा।

आज केन्द्र के वर्धापन दिन के उपलक्ष में यह मुलाकात गुरूआज्ञा से भेजी है। इस का अभ्यास, और इससे पहले समय–समय पर ली गई मुलाकातों में सूचित की गई जागतिक (जगत की) परिस्थिति के संबंध में दी गई सूचनाओं का मनन करने से, उन मुलाकातों में आज की परिस्थिति के बारे में योग्य मार्गदर्शन किया गया है, यह सत्य साबित होगा।

अब आखिर में आत्मनिवेदन की जिस प्रस्तावना से हमने शुरूआत की उसके आगे यह लिखा है कि, जीवन में दुःख के क्षण बहुत कम है, लेकिन अज्ञान के घंटे ज्यादा होने से दुःख के क्षण दिन बनते है और फिर वह साल बनते है। वास्तविकतः जनम को आने वाले हर एक व्यक्ति के सुख की तरतूद ईश्वर ने की है। सुगंधित फूल का कांटा लगना यह उस फूल का कसूर नहीं है और लगा तो भी उसको सहना जरूरी है क्योंकि हम सुगंध के प्रेमी हैं। यही वं. दादाजी परम पूज्यनीय बाबा और दिव्य पुण्य विभूतियों के चरणों में प्रार्थना।

सब उपस्थित भक्त भाविकों को शुभाशीर्वाद।

परमपूज्य बाबा, दादाजी की ओर से।
उन्हीं की वाणी।